राष्ट्रीय वेबिनार

दिनांक : 07 जुलाई 2020

नृत्य विभाग

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

एक दिवसीय राष्ट्रीय नृत्य वेबिनार

विषय

भारत के शास्त्रीय नृत्य : एक अवलोकन

आयोजक : नृत्य विभाग

पंजीयन निःशुल्क

दिनांक : 07 जुलाई 2020 मंगलवार

प्रथम सत्र के अतिथि वक्ता

- श्रीमती रागिनी श्रीवास्तव सागर, कत्थक नृत्य
- डॉ. बसंत किरण बैगलूरू-कुचिपुडी नृत्य
- डॉ. देविका बोर ठाकुर पुणे-सत्रिय नृत्य
- डॉ. हिमा बिन्दु तिरूपति-भरत नाट्यम

द्वितीय सत्र के अतिथि वक्ता

- विदुषी नंदनी सिंह दिल्ली-कत्थक नृत्य
- विदुषी सुजाता महापात्रा भुवनेश्वर ओडीशी नृत्य
- प्रो. वंदना चौबे वनस्थली-मणीपुरी नृत्य
- पं. देवेन्द्र वर्मा दिल्ली-अतिथि वक्तव्य

डॉ. बी.डी.अहिरवार

प्राचार्य/संरक्षक

मार्गदर्शक मंडल

डॉ. संजय खरे
(सह प्राध्यापक-समाजशास्त्र)

डॉ. शक्ति जैन
प्राध्यापक-अर्थशास्त्र

डॉ. हरिओम सोनी
सहसंयोजक/अध्यक्ष संगीत विभाग
मो. : 9039394747

डॉ. प्रेम कुमार चतुर्वेदी
आयोजन सचिव
मो. : 9406567912

डॉ. अपर्णा चाचोंदिया
संयोजक/अध्यक्ष नृत्य विभाग
मो. : 9827271276

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Re Accredited By NAAC "A"

Google Link : https://forms.gle/GPHennt18uL5xce69

सभी पंजीकृत प्रतिभागियों को ई-प्रमाण पत्र प्रेषित किया जायेगा।

Scanned with OKEN Scanner

नृत्य विभाग वेबिनार : 07 जुलाई 2020

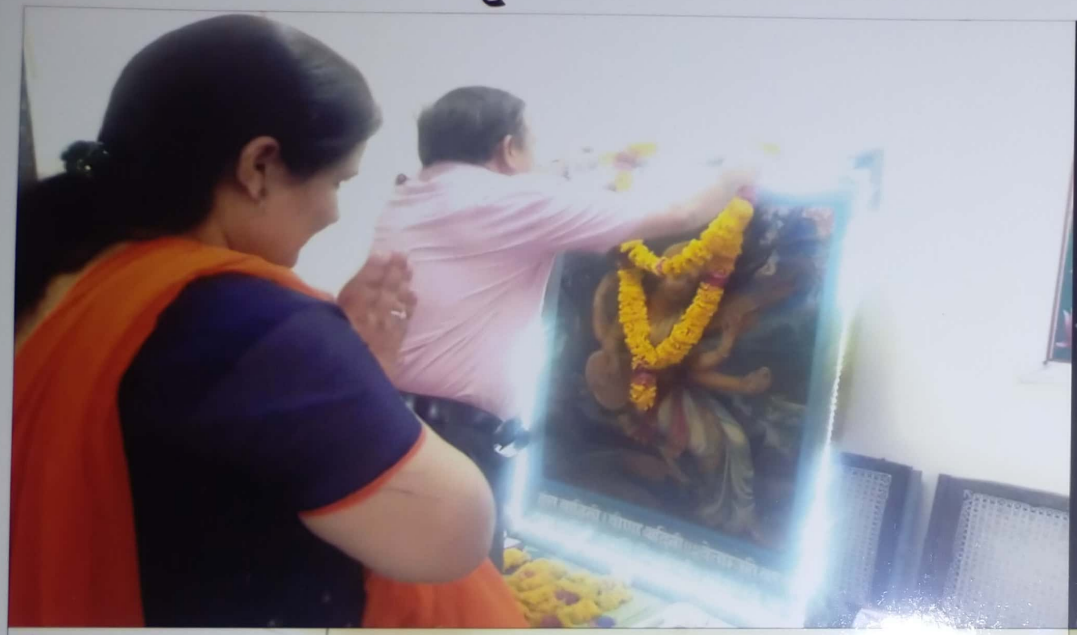

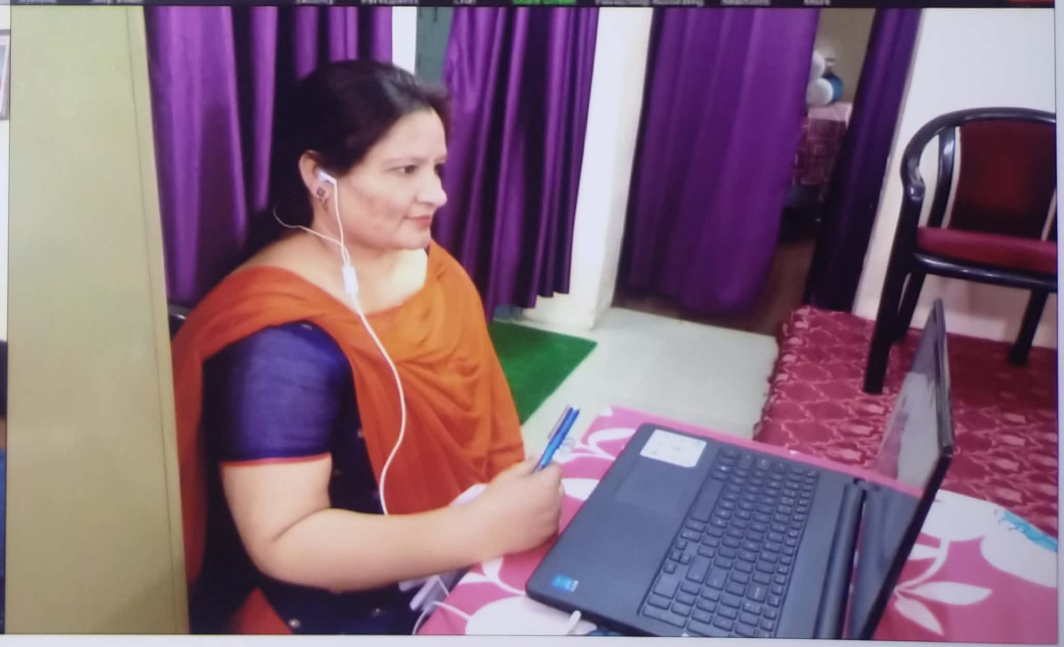

Scanned with OKEN Scanner

राष्ट्रीय वेबिनार : नृत्य विभाग

प्रतिवेदन

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर नृत्य विभाग द्वारा 7 जुलाई 2020 को एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ. बी.डी.अहिरवार जी के मार्गदर्शन में आयोजित राष्ट्रीय वेबीनार में देश के लगभग 16 राज्यों एवं देश के बाहर अमेरिका में स्थित नृत्य प्रतिभागियों द्वारा पंजीयन कराकर बड़े उत्साह एवं मनोयोग से सहभागिता की गई । वेबीनार का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. बी.डी. अहिरवार के द्वारा मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण से किया गया । संरक्षक के रूप में बोलते हुए प्राचार्य जी ने कहा कि नृत्य कला जाति एवं समाज से परे है । वैदिक काल में नृत्य शारीरिक अभ्यास एवं आरोग्य रहने की विद्या थी। नृत्य आनंद की अभिव्यक्ति के साथ-साथ आराधना तथा शत्रु पर विजय प्राप्ति का माध्यम भी है । इससे शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास एवं सामाजिक समरसता पैदा होती हैं। अनेकों पौराणिक कथाओं का वर्णन करते हुए प्राचार्य जी ने नृत्य के इतिहास एवं महत्व पर प्रकाश डाला। यह बेबीनार संगीत एवं नृत्य के जिज्ञासुओं, प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। भारत के शास्त्रीय नृत्य : एक अवलोकन विषय पर आयोजित इस राष्ट्रीय वेबीनार में सागर, बीना, गढ़ाकोटा, दमोह, इंदौर, वाराणसी, जबलपुर, लखनऊ, बेंगलुरु, प्रयागराज, बालाघाट, खैरागढ़, मिर्जापुर, गुजरात, सादुलपुर, कांकेर सांभल, पटियाला, फगवारा, होशियारपुर, चंडीगढ़, जयपुर, संधारा, गाजियाबाद, अमृतसर, अमरावती, दिल्ली, यवतमाल, बहादुरपुर, अल्मोडा, बरेली, जोधपुर, पुट्टापर्ती, तरनतारन, अंबाला, लुधियाना, मंडला, वनस्थली, Virginia(USA), रोपड़, जालंधर, कानपुर, फैजाबाद, संगरूर, केसली, मेरठ, लखीमपुर खेरी, इलाहाबाद, गोरखपुर, कलाडी, आगरा, जौनपुर, नैनीताल, नागालैंड, भिवानी, रामपुर, हरियाणा, छतरपुर, मुंबई, ग्वालियर, गाडरवारा, पन्ना, फतेहपुर, भोपाल, हल्द्वानी, कटनी, कुरुक्षेत्र, मंडी, बैहार, फिरोज़पुर, गोविंदगढ़, गोंडा, झांसी, चुनार, गाजीपुर, करनाल, चित्रकूट, देओरिया, ठाणे,पटना, सैदपुर, देहरादून, बोधगया,रीवा, ललितपुर, छिंदवाड़ा, भावनगर,माल्थौन, महेंद्रगढ़, गंजबासौदा, बड़ोदरा, अजमेर, नालंदा, पारसवाडा, राजनांद गांव, कोरबा, बांदा, हमीरपुर, खुजरा,भुज, अयोध्या,अलीगढ़, चुरु, रावेली, रानीगंज, आज़मगढ़, उरई, धुले, रायगढ़, चिदम्बरम, हरदोई, कोटा, पटना, अशोकनगर, बंडा, शिमला, बुलढाना, सिवनी मालवा, कोंच, बाराबंकी, कुल्लू, खरार, जिंद, नारनौल, टीकमगढ़, जरोरा, यमुनानगर,लाम्ता, उज्जैन, प्रतापगढ़, बुलंदशहर आदि शहरों ने सहभागिता की।

इस वेबीनार का उद्देश्य यही था कि भारत के विभिन्न शास्त्रीय नृत्यों का परिचयात्मक ज्ञान सूक्ष्मतम जानकारी एक दूसरे की संस्कृति एवं विशेषताओं की बारीकियों का ज्ञान प्राप्त कर सके । वेबीनार का यह उद्देश्य काफी हद तक सफल भी रहा, क्योंकि सारे दिन चले इस वेबीनार में लगातार विभिन्न शास्त्रीय

Scanned with OKEN Scanner

नृत्यों के अपनी-अपनी विधा में दक्ष विषय विशेषज्ञों, कलाकारों एवं प्राध्यापकों के साथ साथ बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं संगीत के विद्यार्थी लगातार जूम ऐप पर जुड़े रहे । इस वेबीनार में अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभागी जोड़ सकें इसके लिए जूम एप एवं फेसबुक का सहारा लिया गया, जिससे निर्बाध गति से वेबीनार का संचालन दिनभर हआ ।

प्रथम सत्र

श्रीमती रागिनी श्रीवास्तव	–	व्याख्याता, कथक नृत्य आदर्श संगीत महाविद्यालय सागर (म.प्र.)
डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर	–	सहायक प्राध्यापक, गायन डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (.प्र.म)
डॉ वसंत किरण	–	कुचिपुड़ी एवं भरतनाट्यम नृत्यकला प्रदर्शक एवं नृत्य निर्देशक, बेंगलुरु
डॉ. देविका बोरठाकुर	–	सहायक प्राध्यापक, सत्रिय नृत्य भारती विद्यापीठ, पुणे
डॉ. हिमा बिन्दु	–	सहायक प्राध्यापक, भरतनाट्यम श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालयम, तिरुपति

द्वितीय सत्र

डॉ राहुल स्वर्णकार	–	सहायक प्राध्यापक, तबला डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
विदुषी नंदिनी सिंह	–	वरिष्ठ कला गुरु, कथक नृत्य कथक केंद्र, नई दिल्ली
विदुषी सुजाता महापात्र	–	कला गुरु एवं नृत्य प्रदर्शक ओडीसी नृत्य, भुवनेश्वर
प्रो. वंदना चौबे	–	विभागाध्यक्ष, कथक नृत्य वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
पं. देवेंद्र वर्मा	–	ग्वालियर परंपरा के प्रतिनिधि कलाकार,संगीतज्ञ एवं संगीत निर्देशक फरीदाबाद, हरियाणा

Scanned with OKEN Scanner

इन सभी गुरुजनों, विद्वानों एवं गुणीजनों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति द्वारा ऑनलाइन उपस्थित समस्त प्रतिभागियों को भारत के शास्त्रीय नृत्यों के ज्ञान रस का अमृत पान करवाया। इस वेबीनार में कुल 740 प्रतिभागियों ने पंजीयन करवा कर नृत्य के प्रति अपनी रुचि को प्रदर्शित किया।

इस वेबिनार में मार्गदर्शक का दायित्व डॉ. संजय खरे, (सह प्राध्यापक – समाजशास्त्र) एवं डॉ. शक्ति जैन (प्राध्यापक – अर्थशास्त्र), संयोजक का दायित्व डॉ. अपर्णा चाचोंदिया (विभागाध्यक्ष नृत्य विभाग), सह संयोजक डॉ. हरिओम सोनी (विभागाध्यक्ष संगीत विभाग) ने एवं सचिव का दायित्व डॉ. प्रेम कुमार चतुर्वेदी (तबला संगतकार) ने निभाया। तकनीकी सहयोग पुष्पेंद्र पांडे, अभिषेक दुबे, दिनेश पांडे, प्रियम चतुर्वेदी, तृप्ति गुप्ता एवं प्रियांश चाचोंदिया द्वारा किया गया। शासकीय कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर के नृत्य विभाग द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय वेबिनार में महाविद्यालय परिवार से डॉ. इला तिवारी., डॉ. रेखा बक्शी, डॉ. पद्मा आचार्य, डॉ. संजय खरे, डॉ. शक्ति जैन एवं डॉ. भावना यादव उद्घाटन सत्र में उपस्थित रहे एवं अधिकांश प्राध्यापक एवं छात्राएं वेबिनार में ऑनलाइन जुड़े रहे ।

वेबिनार का संचालन डॉ. अपर्णा चाचोंदिया द्वारा हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में किया गया। आभार का दायित्व। डॉ प्रेम कुमार चतुर्वेदी ने निर्वहन किया ।

भारत के शास्त्रीय नृत्य : एक अवलोकन विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार जनोपयोगी मार्गदर्शी एवं विद्यार्थियों व संगीत प्रेमियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध हुआ इस वेबिनार को लंबे समय तक संगीत जगत में याद रखा जाएगा।

Scanned with OKEN Scanner

कथक नृत्य का सामान्य परिचय

भारत के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य में से कथक नृत्य उत्तर भारत का प्रचलित एवं लोकप्रिय शास्त्रीय नृत्य है कथक नृत्य शैली की उत्पत्ति विकास एवं इतिहास से संबंधित लिखित साहित्य का अध्ययन करने पर इसके स्वरूप एवं नृत्य सामग्री में हुए परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। कथक नृत्य शैली के प्राचीन स्वरूप एवं वर्तमान स्वरूप में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है।कत्थक शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ के संबंध में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत रहे हैं।वह व्यक्ति कथक समझा जाता था जो लोकोपदेश के लिए अभिनय के माध्यम से कथा प्रस्तुत करे।कथक नृत्य के इतिहास को जानने के लिए मोटे तौर पर सिर्फ तीन चरणों में इसकी विकास यात्रा में शामिल होने की जरूरत है प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल ।

प्राचीन काल में नृत्य मंदिरों के प्रांगण में हुआ करता था,जहां का वातावरण आध्यात्म एवं भक्ति भावना से परिपूर्ण था। नृत्य का उद्देश्य ईश्वर उपासना था। कथा वाचन द्वारा अभिनय के माध्यम से नृत्य प्रस्तुति की जाती थी। इसके पश्चात मध्यकाल ने कथक नृत्य शैली को सबसे अधिक प्रभावित किया। आज भी उसकी छाप कथक नृत्य के प्रस्तुतीकरण में स्पष्ट दिखाई देती है। मध्यकाल में कथक नृत्य का स्वरूप विकृत हुआ या विकसित हुआ इस प्रश्न का उत्तर द्वंद पूर्ण होगा। इससे यह कहना शायद सही होगा कि कथक नृत्य का स्वरूप परिवर्तित हुआ। मंदिरों के भक्ति पूर्ण वातावरण से निकलकर कथक नृत्य दरबारों में मनोरंजन का साधन समझा जाने लगा। कौतूहल की भावना जागृत करने के उद्देश्य से अंग संचालन में संतुलन एवं फुर्ती पर ध्यान केंद्रित कर अभ्यास करवाया जाने लगा, जिससे की चमत्कृत प्रभाव युक्त नृत्य हो। नृत्य में विलासिता और श्रृंगारिकता झलकने लगी।नृत्य आचार्यों ने अपने ए। कथक नृत्य शैली में कुछ विशेषताएं औरअपने आश्रय दाताओं को प्रसन्न करने के लिए बहुत से प्रयोग कि- स्थानों के आधार पर घराने दारी विकसित होने लगी। घराना नृत्य प्रस्तुति की एक विशेष शैली का परिचय बना।आज कथक नृत्य के प्रमुख चार घराने हैं जिन्हे आज कथक नृत्य के लखनऊ, जयपुर,बनारस और रायगढ़ घराने के नाम से जाना जाता है।

स्वतंत्रता के बाद के काल में कत्थक प्रस्तुतीकरण में भी स्वच्छंदता के अवसर दिखने लगे। दरबारों के बाहर पुनः कथक नृत्य को एक सम्मानीय मंच मिला। नृत्य संगीत आदि कलाओं को शिक्षा जगत में स्थान मिला। अपनी विकास यात्रा करते हुए कथक नृत्य प्राचीन काल से आधुनिक काल तक पहुंच गया। इस यात्रा के दौरान कथक नृत्य शैली में अनेकानेक परिवर्तन हुए। वर्तमान में हम कथक नृत्य शैली के जिस स्वरुप से परिचित है उसे ही प्रारंभिक स्वरूप नहीं कहा जा सकता।सबसे अच्छी बात यह है कि सम विषम परिस्थितियों में भी कथक नृत्य का अस्तित्व नष्ट नहीं हुआ बल्कि उसने अपने कलाकोष को और भी समृद्ध कर लिया।आज कथक नृत्य के जिस स्वरूप को हम देख रहे हैं वह कई वर्षों की साधना का प्रतिफल है। विषम परिस्थितियों में भी यह नृत्य शैली अपने अस्तित्व को बचाए रही और इसमें होने वाले परिवर्तनों को अपनी विशेषता बनाकर संग्रहित करती रही। वर्तमान में कथक नृत्य का स्वरूप बहुत विराट है और प्रयोग एवं संभावनाओं के लिए सदैव स्वागतातुर है।

मेरा वक्तव्य कथक नृत्य के प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए है जिन्हें नृत्य के तकनीकी पक्ष की जानकारी नहीं है इसलिए सामान्य बातचीत द्वारा प्रारंभिक जानकारी देना मेरे वक्तव्य का उद्देश्य है।

श्रीमती रागिनी श्रीवास्तव

Scanned with OKEN Scanner

संगीत में नृत्य की भूमिका

कथा की उत्पत्ति नटवरी से या कथा वाचन से होती है।अभिनय करके प्रस्तुत करना और उसमें नृत्य के तत्व डालने के लिए लय,ताल को संयोजित करके रखना बहुत महत्वपूर्ण है।मुगल काल में आए श्रृंगारिक एवं विलासिता के प्रभाव के बाद भी अपने आध्यात्मिक एवं शास्त्रीय रूप को बचाए रखने में गुरुओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।मेरे विचार से एक नया पहलू मुझे लगता है गायन,वादन और अभिनय को एक साथ लाने वाली एकमात्र विधा नृत्य है। कहा जाता है कि नाट्य शास्त्र की जो अवधारणा है नाट्य में संगीत लय व ताल शामिल है उसको एक अलग स्तर तक ले जाने का कार्य नृत्य करता है।क्योंकि इसमें अभिनय है गायन है ,वादन की संगति है, स्वर वाद्य है,ताल वाद्य है।यह एक ऐसा समन्वित स्वरूप है जो नाटक को संपूर्णता प्रदान करता है। लयात्मक गति और ताल के तत्व भी डालता है।

नर्तक,नृत्य शिक्षक या गुरु एक संपूर्ण संगीतकार है जो व्यक्तित्व को संपूर्णता प्रदान करता है। इसलिए अभिभावक अपने बच्चों को व्यक्तित्व विकास के लिए नृत्य की शिक्षा दिलाना चाहते हैं।

नृत्य अभ्यास में अधिक से अधिक मांसपेशियों और मस्तिष्क की मानसिक क्रियाओं की सहभागिता रहती है एवं शारीरिक रूप से सक्रिय रहते हैं।गायन में कंठ एवं वाद्य वादन में कोई अंग विशेष ही सक्रिय रह पाता है,जबकि नृत्य में सारा शरीर सक्रिय रहता है। नृत्य से अच्छा व्यायाम शरीर और मस्तिष्क के लिए दूसरा नहीं है।

डॉक्टर अवधेश प्रताप सिंह तोमर

Scanned with OKEN Scanner

BHARATNATYAM

Bharatanatyam is a composite art having for its component elements like dance, drama ,music, rhymes, rhythm. Built upon the principles of Natyashastra written by a great sage Bharata Muni. This classical dance originate from the state of Tamil Nadu belongs to the South India. In initial time it is called Kutu. There were two types of Kutu -1-Sandi Kutu (classical form) 2- Vinod Kutu (Folk Arts)

Sandi Kutu was later called Sadir or the Dasiattam(female artist) girl or woman who dedicates herself to God and known as Devdasi. Devdasi used to perform this dance that was dedicated to the temple of Tamilnadu Vrihadeshwara temple Tanjore. It is mentioned that about 400 dancers were attached in the temple. Dance Guru called Nattuvanar (male) who teaches and is responsible for this dance form. The name of Sadir changed in Bharatanatyam. ' Bharat' stands on 3 words or elements Bhav,Raag,Taal. Bhagwat Mela (Theatre form or natakam) and Kuravanji (Dance Opera) were responsible for giving the shape to this solo dance.Main component of Bharatanatyam Dance

1- Nritta (Pure Dance)
2- Nritya(Mime or Expression)

Four great musician Chennaiya, Punnaiya Wadivelu, Shivanand. These four brothers were famous Nattuvanar and were responsible for present structure of Bharatnatyam. They were responsible for present structure of Bharatnatyam.

Dr. Himabindu

Scanned with OKEN Scanner

कुचिपुड़ी

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते

संगीत संपूर्ण तभी होता है जब गायन वादन एवं नृत्य तीनों होते हैं। बाला त्रिपुर सुंदरी देवी की प्रार्थना से नृत्य प्रारंभ करते हैं। कुचिपुड़ी एक गांव का नाम है इसी नृत्य क्षेत्र से कुचिपुड़ी प्रारंभ हुआ। ऐसा माना जाता है कि सारे कुचिपुड़ी वहीं से आए थे।

नाट्यशास्त्र के 11 अंश में से दक्षिणात्य प्रवृत्ति के अंतर्गत कुचिपुड़ी आता है। तेलुगु, शास्त्र, कोई एक वाद्य एवं संगीत सीखने के बाद यह नृत्य सिखाया जाता है। कुचिपुड़ी में 16 ब्राह्मण परिवार थे।

कुचिपुड़ी और कथकली नाट्य पद्धति से आए हैं। बाकी सारे नृत्य पद्धति से इसलिए इसमें नाट्यशास्त्र के अंगो का परिपालन होता है। नाट्यशास्त्र के भाव,राग, ताल आदि इसके अंतर्गत आते हैं।

कुचिपुड़ी पुरुष प्रधान रहा एवं 1930 से 1940 के बाद ही इस नृत्य शैली में स्त्रियों का आगमन प्रारंभ हुआ। तब तक स्त्रीवेशम पुरुष ही करते थे। इस नृत्य शैली में एक रिवाज है जिसे रूपानुरूपम बोला जाता है।

कुचिपुड़ी में 'भामाकलापम' (कृष्ण और सत्यभामा की कहानी पर आधारित हैतेरहवीं शताब्दी में श्री सिद्धेंद्र (योगी की रचना, जो कि इस के जनक माने जाते हैं। अष्टनायिका इस एक अंग रचना में देखने को मिलती हैं। पंडित श्री वेदांत नारायण शर्मा जो कि पहले पद्मश्री हैं स्त्रीवेशम के लिए जाने जाते हैं। इसमें परकायप्रवेशं अर्थात् दूसरे पात्र में प्रवेश की दिखाते हैं।चतुर्विध अभिनय आंगिक,वाचिक, आहार्य, सात्विक में से वाचिक अभिनय पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है,क्योंकि नाटकीय कलाओं के बीच बीच में संवाद भी बोलना पड़ता है। स्थान के आधार पर संवाद की भाषा होती है जैसे केरल में मलयालम। समाज से कला अलग नहीं हो सकती इसलिए नृत्य के माध्यम से लोगों को सामाजिक संदेश दिया जाता है। कुचिपुड़ी में 'गोलाकलापम्' की प्रस्तुति में गर्भावस्था के 9 महीनों को सुंदर तरीके से दिखाया जाता है। 'चांडालिका'जो कि रवींद्रनाथ ठाकुर की रचना है उस पर भी प्रदर्शन किया जाता है। गोलकुंडा के राजा अबुल हसन काली शाह ने 600 एकड़ जमीन इस कला पांडित्य को देखते हुए उपहार में दी थी।

नाट्य शास्त्र में वर्णित लोकधर्मी नाट्यधर्मी का प्रयोग भी इस नृत्य में किया जाता है। सिचुएशन के हिसाब से कुछ लोक मुद्राओं का प्रयोग भी करते हैं। अभिनय दर्पण संगीत रत्नावली,वृहद्देशी, नृत्य रत्नावली, भरत नाट्यशास्त्र आदि ग्रंथों का पालन इस नृत्य में किया जाता है। मेरे गुरु पद्मभूषण व्यंकटेश चिन्ना सत्यम ने इस कला में क्रांतिकारी परिवर्तन किए ।1958 में संगीत कला अकादमी द्वारा नृत्य कांफ्रेंस की गई एवं 1959 में कुचिपुड़ी को शास्त्रीय नृत्य माना गया ।पद्म विभूषण यामिनी कृष्णमूर्ति ,पद्म भूषण राजा राधा रेड्डी ,पंडित श्री शोभा नायडू के कठिन परिश्रम के कारण यह नृत्य प्रतिष्ठित हुआ। इसे नाटकीय परंपरा से एकल नृत्य में परिवर्तित किया गया। इसमें थाली पर प्रदर्शन, जमीन पर रंग डालकर मयूर, सिंह नंदिनी आदि का प्रदर्शन किया जाता है। बहुत से फिल्मी कलाकार जैसे वैजयंती माला, रेखा, वहीदा रहमान आदि भी इस नृत्य से जुड़े।

डॉ वसंत किरण

Scanned with OKEN Scanner

ओडीसी नृत्य

All classical dance like sisters. Odissi is one of the classical dance of Odisha. उड़ीसा को उद्रा या उत्कल कहा जाता था। पहले यहाँ महारी और गोतीपुआ नृत्य प्रचलित थे। उन्हीं का परिष्कृत रूप ओडीसी नृत्य है, जिसमें बहुत से गुरुओं का योगदान रहा। गुरु केलुचरण महापात्रा, गुरु देवेंद्र प्रसाद दास एवं गुरु पंकज चरणदास को त्रिधारा कहा जाता है। गुरु पंकज चरणदास महारी नृत्य, देवा प्रसाद दास अभिनय एवं गुरु केलुचरण महापात्र इन दोनों में निपुण थे। इसमें चार भंगियों का प्रयोग किया जाता है। समभंग (सीधा), अभंग (आधा झुका), त्रिभंग (तीन जगह से झुकाव गर्दन, कमर, घुटना) एवं चौका है। इन्हीं चारों भंगियों पर पूरा नृत्य आधारित होता है। भगवान जगन्नाथ मंदिर में महारी पूजा सेवा के समय भक्ति भाव के साथ सारी मुद्राएँ उपयोग करते थे। अष्टपदी किया जाता था एवं एवं गीत गोविंद को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। गोतिपुआ लड़कियों के वेश में बाहर मनोरंजन के लिए नृत्य करते थे। बन्ध नृत्य किया जाता था। इसकी साधना बहुत कठिन होती थी। पद्म विभूषण श्री केलुचरण महापात्र गोतिपुआ नर्तक थे और कोरियोग्राफर भी। यह नृत्य शैली भुवनेश्वर, पुरी, उड़ीसा की मूर्तिकला पर आधारित है। बहुत सी भंगियों का प्रदर्शन इस नृत्य में होता है। वीणा, मुरली, मंजीरा, दर्पण आदि मंदिरों में सारी भंगी है। प्रस्तुति क्रम में मंगलाचरण, बटु नृत्य, पल्लवी, अभिनय एवं मोक्ष नृत्य किया जाता है।

मंगलाचरण–हमेशा आचरण पवित्र होना चाहिए प्रवेश करते समय पुष्पांजलि मुद्रा में भगवान जगन्नाथ को प्रणाम करके, फिर भूमि प्रणाम के बाद श्लोक या वंदना की जाती है जिसमें देवी सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी की स्तुति की जाती है। सभा प्रणाम में त्रिखंडी प्रणाम होता है पहला देवताओं को दूसरा गुरु नमन, तीसरा दर्शकों को।

बटुनृत्य – वीणा वेणु, मर्दल, मंजीरा आदि का प्रयोग किया जाता है।

पल्लवी–पल्लवी – रागाधारित होती है। जैसे बसंत राग पर बसंत पल्लवी। राग के विभिन्न लय होते हैं मंद से धीरे–धीरे तीव्र की ओर ताल का भी बहुत वैविध्य है।

अभिनय – आंगिक और मौखिक अभिनय द्वारा दर्शकों को भाव समझाते हैं। विभिन्न मुद्राओं एवं रस का प्रयोग किया जाता है।

मोक्ष नृत्य – नृत्य का समापन मोक्ष नृत्य से होता है।

विदुषी सुजाता महापात्रा

Scanned with OKEN Scanner

मणिपुरी नृत्य

भारत के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित मणिपुर राज्य का शास्त्रीय नृत्य मणिपुरी नृत्य है। इसे मेतेई जगोई भी कहा जाता है। मेतेई का अर्थ है मणिपुरी और जगोई का अर्थ है नृत्य। भारत के अन्य शास्त्रीय नृत्यों की तुलना में इस नृत्य में भक्ति भाव पर अधिक बल देते हैं। इसकी उत्पत्ति पौराणिक मानी जाती है। इसमें तांडव लास्य दोनों अंगों का महत्व है। यह नृत्य हिंदू धर्म के वैष्णव संप्रदाय से संबंधित है। 15वीं शताब्दी तक मणिपुर की अपनी संस्कृति थी वहाँ पर वैष्णव धर्म नहीं था। सनामाही धर्म था। सनमाही धर्म का सबसे प्राचीन नृत्य लाई हरोबा है। लाई का अर्थ होता है देवता और हरोबा मतलब आमोद प्रमोद। लाई हरोबा नृत्य यहाँ का सबसे प्राचीन लोकनृत्य है जो शास्त्रीय नृत्य का आधार है। मणिपुर में पुजारी को मैबा और पुजारिन को मैबी कहते हैं। यह प्रमुख अनुष्ठानक माने जाते हैं। मणिपुर के राजा भाग्यचंद्र संगीत के शौकीन थे उन्होंने बिखरी हुई संस्कृति की पृष्ठभूमि को संवारने में अपना अमूल्य योगदान दिया। वे कृष्ण के परम भक्त थे। कहा जाता है भगवान कृष्ण ने स्वप्न में मणिपुर के राजा को कहा- कटहल के वृक्ष की लकड़ी की मेरी प्रतिमा बनाकर उसके सामने रास करवाओ। उसकी वेशभूषा, संगीत, विवरण आदि के बारे में भी स्वप्न में बताया। राजा भाग्यचंद्र ने गुरुओं के साथ भागवत परंपरा पर आधारित शास्त्रीय राग ताल पर रास की रचना की। यह नृत्य विष्णु पुराण, भागवत पुराण और गीत गोविंद की रचनाओं पर आधारित है। इसका प्रथम मंचन 1769 में श्री गोविंद जी के मंदिर में 5 दिन तक किया गया। राधा का पात्र राजा की बेटी वृंदावती मंजरी ने निभाया। इस तरह मणिपुरी नृत्य में रास परंपरा का प्रारंभ हुआ। वहाँ के मंदिरों में आज यह नृत्य किया जाता है। गुरु रसानंद स्वरूपानंद ने इसे आगे बढ़ाया। रास पांच प्रकार का होता है – महारास, बसंत रास, कुंजरास, नित्य रास, दिवा रास महारास।

कार्तिक पूर्णिमा की चांदनी रात में यह रास खेला जाता है। यह श्री गोविंद जी के मंदिर में होता है – जो श्रीमदभागवत के दसवें स्कंद पर आधारित है। कृष्ण राधा से संकेत स्थल पर मिलने जाते हैं। उनकी मुरली की धुन सुन गोपियाँ भी चली आती हैं और उन्हें चक्राकार घेर कर नृत्य मग्न हो सुध बुध खो बैठती हैं। पीलांबर श्री कृष्ण राधा के संग कुंज में छिप जाते हैं। गोपियाँ कृष्ण को ना देख कर वन वन ढूंढती हैं। राधा में अहं आ जाता है जिसे कृष्ण दूर करते हैं। एक गोपी एक श्याम रस मग्न हो नृत्य करते हैं।

कुंजरास – यह रास अश्विनी पूर्णिमा को किया जाता है। इसमें अभिसारिका नायिका का बहुत सुंदर चित्रण किया जाता है। यह रास राजा भाग्यचंद्र के समय प्रारंभ हुआ।

नित्य रास – महाराज चंद्रकीर्ति के शासनकाल में प्रारंभ हुआ। यह रास गीत गोविंद महाराज, गोविंद लीलामृतम तथा पदकल्पदरू पर आधारित है। इस रास की कोई विशेष तिथि नहीं होती इसको किसी भी समय किया जा सकता है।.

दिवा रास – महाराज चूराचंद्र के शासनकाल में प्रारंभ हुआ। बाकी रास रात में होते हैं यह रास दिन में होता है। दिवा रास में राधा कृष्ण के साथ आनंद मंजरी भी नृत्य करते हैं। मणिपुरी नृत्य के दो अंग हैं तांडव, लास्य। **मणिपुरी** नृत्य में पैरों की आवाज नहीं आती। अंतर्मुखी और संयमित नृत्य है। पारदर्शक दुपट्टा ओढ़ते हैं जिससे प्रभु से तारतम्यता भंग ना हो। भक्ति रस, अभिनय सांकेतिक होते हैं। छोटी-छोटी संगीतिक माला होती हैं। ताल का प्रस्तार होता है। ब्रह्म ताल, रूद्र ताल का प्रयोग होता है। इसके दो घराने हैं गुरु अमोबी सिंह (ताल पद संचालन) एवं गुरु विपिन सिंह (लास्य)।

वेशभूषा – कृष्ण केसरिया धोती मणियों की माला मुकुट आदि पहनते हैं। राधा छतरी की तरह गोल घेरदार लहंगा पहनती हैं जिसे कुमिन कहते हैं। सिर पर कोकतुंभी। राधा का लहंगा हरा होता है। इसके आविष्कारक राजा भाग्यचंद्र हैं।

वाद्य– पुंग, ढोल, बांसुरी, शंख, इसराज मंजीरे आदि का प्रयोग किया जाता है।

रचनाएं – जयदेव, विद्यापति, चंडीदास, गोविंद दास, ज्ञान दास की पदावली तथा संस्कृत, मैथिली और ब्रज भाषा में लिखित रचनाएँ।

कलाकार – गुरुदेव रविंद्रनाथ ने 1926 में मणिपुरी नृत्य को शांति निकेतन के पाठ्यक्रम में डाला गया। गुरु महा कुमार एवं गुरु बुद्धिमत्ता गुरुओं को लेकर आए नृत्य शिक्षा देने के लिए। इसके प्रमुख कलाकार गुरु विपिन सिंह, तोनम देवी, थंबाल देवी, सूर्यमुखी, कलावती देवी आदि हैं। विदेशों में झावेरी बहनों ने इस नृत्य का बहुत प्रचार प्रसार किया।

डॉ. वंदना चौबे

Scanned with OKEN Scanner

नृत्य और वाद्य

सभी नृत्यों में वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वाद्यों की संगति के बिना नृत्य प्रस्तुति बेरंग सी हो जाएगी। ताल निर्वाहन का नियम होता है जिसका अनुसरण करना अनिवार्य होता है। शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुति में वाद्यों का बहुत महत्व होता है। मंच पर गायक या वादक का कोई ताल संगतकार ना होने पर सौंदर्य का स्तर क्या हो जाएगा। नृत्य के साथ संगत करना आसान नहीं होता नृत्य के साथ संगत करने में वादक की सुनने की प्रवृत्ति बहुत अच्छी होना चाहिए। नृत्य को देखकर ही वाद्य के साथ संगत संभव होती है।वाद्य वादकों की एकाग्रचित्तता और उनका कला कौशल प्रस्तुति के सौन्दर्य को कई गुना बढ़ा सकते हैं और उनके द्वारा की गई एक लापरवाही सारे कार्यक्रम को असफल बना सकती है।

डा. राहुल स्वर्णकार

Scanned with OKEN Scanner

कथक नृत्य : भारत के मानचित्र पर

''कथा करे सो कथक कहावे ''

मंदिरों के प्रांगण में कथा करते थे तब से यह नृत्य चला आ रहा है । कई पड़ाव आए मुगल काल में यह नृत्य ज्यादा परिवर्तित हुआ । कृष्ण की लीलाएं कत्थक में करते हैं । मुगल काल में भक्ति भाव छूटा दरबारों में नवाब बादशाहों को खुश करने के लिए रूप बदला । सलामी आ गई । इसके बाद अंग्रेजों के समय दरबार से निकलकर बाहर आ गया । बाजारों से मंच तक आने में इसको 100 साल लग गए 1920 में मैडम मेनका ने इसके लिए बहुत प्रयास किए । आज मंच को छोड़कर इंटरनेट पर घर बैठे इसमें शामिल है ।

कत्थक कहाँ का नृत्य है ? कश्मीर से मध्य प्रदेश तक महाराष्ट्र, वेस्ट बंगाल, राजस्थान से गुजरात यहाँ दूसरा शास्त्रीय नृत्य नहीं था यहाँ सिर्फ कत्थक था । इसकी नींव नाट्यशास्त्र है, यह कश्मीर में लिखा गया । 1970 में दशावतार प्रस्तुत किया । नृत्य के दो रूप बन गए थे जिन्हें मुगल दरबार लखनऊ घराना और हिंदू दरबार में जयपुर घराना कहा जाने लगा। जयपुर घराने में अभी भी वही परंपरा चल रही है। लमछड़ परने, गत निकास, कवित्त आदि । नाट्यशास्त्र अभिनय दर्पण के अनसार चारों अभिनय भेदों का प्रयोग किया जाता है । एक पेड़ की जड नाट्यशास्त्र है जब उसकी शाखाएँ फूटी तो सारे शास्त्रीय नृत्य बने। स्थान, संस्कृति आदि के आधार पर उसमें विभिन्नता दिखाई देती है। कत्थक सहज और कलाधर्मी नृत्य है। कत्थक सीधा नाच नहीं है । लास्य व तांडव का मिश्रण है। वाचिक अभिनय में भी ताडंव लास्य का संतुलन चलता है। खुला नाच का मतलब अनंत सागर और गगन जैसा विखरा बंदिश में रहकर बंदिश करते हैं । दर्शकों को देखकर नृत्य का प्रस्तुतीकरण बदल देते हैं । कहाँ से कौन सा फूल चुने और गुलदस्ता बनाएँ। तबला वादक के साथ उठाने शुरू की एक दूसरे से परिचय हुआ कौन कितने पानी में है इसका पता चलता है। कथक नृत्य के वस्तु क्रम में आमद (आगमन), प्रणाम, स्तुति, नगमे या लहरे को बांधना, खूबसूरत अंदाज में खड़े होना, नजर का रोकना, नगमे के साथ भृकुटी, गर्दन, कसक, मसक पूरा होता है । बंद हाथ का थाट, खुले हाथ का थाट, आमद परन (परनो का समावेश), गणेश परन, पखावज परन, कवित्त अभिनव दर्पण के अनुसार सभी कुछ कथक में करते हैं दृष्टि भेद, भृकुटी भेद, ग्रीवा भेद आदि ।

प्रमेलु – आवाज से एहसास हो – जिसमें प्रकृति के बोल जुड़े हों ।

गत निकास–मध्यकाल में डेढ़ सौ से ऊपर गत निकास की रचना हुई । खास मुद्रा में गति के साथ निकल कर आना ही गत निकास है। सारी नायिका भेद इसमें कर सकते हैं । अनेकों तरीके से घूंघट का भाव दिखा सकते हैं ।

गतभाव – गति के साथ भाव या कथा का प्रदर्शन किया जाता है । इसमें शब्द नहीं रहते आंगिक व सात्विक भाव होता है । नर्तकी एक आहार्य में पूरा नृत्य कर जाती है पलटे से चरित्र बदलते हैं । गतभाव में पलटे के द्वारा सब कुछ दिखा सकते हैं ।

गायन, साहित्य – बसंत –होरी, कजरी, चैती, टप्पा, ठुमरी, भजन आदि । समयानुसार साहित्य जुड़ता गया मीरा, सूरदास, कबीर आदि ।

विदुषी नंदिनी सिंह

Scanned with OKEN Scanner

सत्रिय नृत्य

असम में सत्रिय नृत्य पुरानी नृत्य परंपरा है। यह नृत्यशैली 2000 मे शास्त्रीय नृत्यों में शामिल की गई।सत्र शब्द भागवत पुराण में भी मिलता है, जहां भगवान के नाम पर खुद को समर्पित करते हैं। सत्र में श्रीमंत शंकरदेव और माधव देव दोनों वैष्णव भक्त थे। 15 वी शताब्दी इस नृत्य के क्षेत्र में बहुत महत्व रखती है, क्योंकि इसमें नृत्य परक भक्ति संबंधी रचनाएं की हुई। श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव दोनों ने वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए सत्रिय नृत्य, संगीत अंकिया नाट, चित्रकला आदि को इसमें समावेश कर के सत्रिय संस्कृति का निर्माण किया था। यह नृत्य वैष्णव रचनाओं पर आधारित है।सत्र असम की ब्रह्मपुत्र नदी माजुली रिवर आईलैंड में था। भारत सरकार ने जब इसे शास्त्रीय नृत्य माना तो इसे जीवंत नृत्य परंपरा कहा। 500 साल पुरानी जीवंत परंपरा माना। मुगल काल और ब्रिटिश काल में सभी नृत्यों में परिवर्तन हुए देवदासी एक्ट लगा दिया गया ,मंदिर में नृत्य बंद हो गया था।

सत्रिय नृत्य समाज से अलग जगह था आम लोग वहां पर नहीं जा सकते थे। ऐसा माना जाता था कि यह नृत्य यदि बाहर आएगा तो प्रदूषित हो जाएगा,इसीलिए सत्र के लोग बाहर नहीं आने देते थे।सन् १९१७, १९१८ १९१९ में शोधार्थियों ने पाया कि यह नृत्य बहुत सुंदर हैं इसे दुनिया के सामने आना चाहिए। अन्य शास्त्रीय नृत्यों की तरह इसमें भी स्थान , भ्रमरी, चारी आदि मिलते हैं।

नाट्य शास्त्र में प्रारंभिक कहानी के अनुसार पार्वती जी ने उषा को नृत्य की शिक्षा दी थी। उषा आसाम के बान राजा की बेटी थी, जो तेजपुर से थी । वहां से लास्य अंग की उत्पत्ति होती है।

सत्रिय नृत्य में २ स्थान होते हैं पुरुष स्थान एवं स्त्री स्थान। इसमें सबसे महत्वपूर्ण होता है माटी अखरा। इसमें प्रकृति भ्रमरी, पुरुष पाक पुरुष स्थान में होते हैं। इसमें कुछ आंचलिक हस्त भी होते हैं जैसे मुजरा हस्त, पल्लव हस्त,वंशीहस्त, शशक हस्त आदि। 14 प्रकार की भ्रमरी होती है। इस नृत्य की खास बात यह है कि इसमें आर्क शेप को मेंटेन रखना होता है। अन्य शास्त्रीय नृत्यों की भांति पताका हस्त का प्रयोग नाट्यारंभ में होता है। सभी शास्त्रीय नृत्य मंदिरों से आए हैं एवं सभी में वंदना से नृत्य का प्रारंभ होता है। इसी तरह सत्रिय नृत्य में भी प्रारंभ वंदना से ही होता है। उसके बाद शुद्ध नृत्य रामदानी, पुरुष स्थान में नादु भंगी जिसमें नाद को अलगकरना होता है। अलग भंगी से प्रस्तुत-झुमरा, साली नृत्य शुद्ध नृत्य की प्रस्तुति होती है ।अभिनय में श्री शंकर देव और माधव देव ने (फीमेल)12 अंकिया नाट लिखे थे उन्हीं से अभिनय की उत्पत्ति हुई है कीर्तन घोषाल नाम कीर्तन आदि से भी अभिनय की प्रस्तुति होती है। अंकिया नाट में पारिजात हरण, कालिया मर्दन, राम विजय आदि 12 अंक हैं। कीर्तन में कृष्णकका वृंदावन के वर्णननामूलक, माखन चोरी आदि अभिनय प्रस्तुत करते हैं। नृत्य तीव्र लय में खत्म होता है।

कथक नृत्य आदि में मंच पर उपज होती है ,जबकि इस नृत्य में ऐसा नहीं होता। इस नृत्य में 'हाली' का प्रदर्शन किया जाता है जिसमें हाथ के साथ झुकाव लास्य प्रधान नृत्य होते हैं। इसको कोमल तांडव बोला जाता है श्री कृष्ण के अभिनय की प्रस्तुति के लिए किया जाता है। अन्य शास्त्रीय नृत्यों की भांति इसमें भी एकाहार्य में अलगअलग पात्रों को -म की किंकिनी इसमें महत्वपूर्ण होती है। शुद्ध नृत्य से प्रारंभ करते हैं वंदना या संस्कृत श्लोक प्रस्तुत किया जाता है। आसा के बाद नमस्कार या प्रणाम करते हैं,जिसमें हृदय से एक कमल भगवान को समर्पित करने का अभिनय करते हैं। इसमें हस्त करण का प्रयोग भी होता है आवेष्टित, उद्वेष्टित,व्यावर्तित, परिवर्तित इनका बहुत प्रयोग होता है। इसमें छूता ताल (तिस्र जाति) धुकुनी ताल (चतस्र जाति) का प्रयोग होता है। इस नृत्य में रस प्रयोग और नायिका भेद का भी प्रयोग होता है। यह नृत्य भक्ति परंपरा से संबंधित है इसलिए भागवत या भगवान के वाङ्मय रूप के सामने चार प्रहर में यह नृत्य करते हैं।

डॉ देविका बोरठाकुर

Scanned with OKEN Scanner

नृत्य के आराध्य देव

सभी नृत्य अध्यात्म से जुड़े हैं, एवं देवी देवताओं की आराधना से जुड़े हैं। विभिन्न मंचों पर हम उन्हें देखते हैं।चिंतन का विषय यही है कि जब मंदिरों में भगवान की सेवा पूजा में यह नृत्य करते होंगे तो कितना समर्पण होता होगा। अभी एक और नृत्य शास्त्रीय नृत्यो में जुड़ने वाला है 'छऊ नृत्य' जो अभी तक अर्धशास्त्रीय नृत्य माना जाता है। छऊ नृत्य तीन तरह का होता है, जो कि मार्शल आर्ट जैसा है । संगीत के जन्मदाता आदि देव भगवान शिव शंकर हैं, जिनकी रावण ने शिव तांडव में स्तुति की है। डमरु हाथ में इस बात का द्योतक है कि वे वाद्य विशारद हैं तांडव नृत्य करते हैं नृत्य विशारद हैं। मां पार्वती के लास्यऔर भगवान शिव के तांडव से सारे नृत्यों की उत्पत्ति हुई। तालों का जन्म भी शिवजी से हुआ ताल शब्द भी उन्हीं की देन है

पंचम वेद में आचार्य भरत ने एक सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया। इसमें नाट्य ,गीत ,वाद्य को स्थापित किया।

"गीतं वाद्यम तथा नृत्यं त्रयंब संगीत मुच्यते"

गायन वादन एवं नृत्य तीनों को समाहित करके ही संगीत कहा जाता है। बिना वादन के गायन नहीं, बिना गायन के वादन पूर्ण नहीं होता, नृत्य के साथ गायन वादन ना हो तो संपूर्ण नहीं होता इसका यही संदेश है कि समन्वय बनाना जरूरी है।मानव मात्र से प्रेम करना चाहिए एवं सामंजस्य रखना चाहिए।

तांडव नृत्य जहां चंडिका करती हैं (भवानी), वहां कामदेव नजदीक नहीं आ सकते अर्थात हमारी सांसारिक व्रत्तियां नहीं आ सकती। यदि शास्त्रों से अलग देखें तो शिव जी, गणेश जी ने भू दुंदुभी नामक वाद्य बनाया। भगवान श्री कृष्ण तो संपूर्ण संगीत हैं नृत्य करें तो रास नृत्य महारास, बांसुरी का वाद्य वादन करते हैं। रामशंकर पागल दास जी ने अपनी तबला कौमुदी में कहा है जब भगवान श्री कृष्ण ने कालिया मर्दन किया तब फन पर नृत्य करते हुए पदाघात से तालों की सृष्टि हुई।उनसे बड़ा न कोई राजनीतिज्ञ और न नर्तक न मैनेजमेंट करने वाला।ऐसा विराट व्यक्तित्व है उनका।भगवान श्री कृष्ण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। गुरु शुक्राचार्य ने लिखा है नर्तक विविध रूप धारण कर सकता है राधा से मिलने जाते हैं तो चूड़ी वाले का वेश बनाकर, और भी कई रूप धारण करते हैं। ऐसे विराट व्यक्तित्व की शरण में जाने से ही कल्याण होगा। यही आज के वेबीनार का निष्कर्ष है।

पं श्री देवेंद्र वर्मा.

Scanned with OKEN Scanner

भाव भंगिमा पूर्ण अभिव्यक्ति ही नृत्य है : डॉ. अहिरवार

सागर, 07 जुलाई 2020 मानवीय शारीरिक कलाओं की भावभंगिमा पूर्ण रसमय अभिव्यक्ति ही नृत्य है। नृत्य की विधा प्रगतिहासिक काल से प्रारंभ होती है । उक्त उद्गार शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर के प्राचार्य डॉ. बी.डी. अहिरवार ने नृत्य विभाग द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार में संरक्षक के रूप में बोलते हुये व्यक्त किये । आपने कहा कि नृत्य कला जाति, समाज, धर्म से परे है । वैदिक काल में नृत्य शारीरिक अभ्यास एवं आरोग्य रखने की विद्या थी । नृत्य आनंद की अभिव्यक्ति के साथ-साथ आराधना तथा शत्रु पर विजय प्राप्ति का माध्यम भी नृत्य है। वेबीनार का शुभारंभ माँ सरस्वती के पूजन से हुआ, वेबीनार सचिव डॉ. प्रेमकुमार चतुर्वेदी ने वेबीनार आयोजन पर विस्तृत चर्चा की। वेबीनार मार्गदर्शक डॉ. शक्ति जैन प्राध्यापक अर्थशास्त्र ने वेबीनार की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। वेबीनार मार्गदर्शक डॉ. संजय खरे सह प्राध्यापक समाजशास्त्र ने आयोजन में शामिल सभी वक्ताओं को शुभकामनायें दीं । मंच संचालन करते हुए नृत्य विभागाध्यक्ष डॉ. अर्पणा चाचोंदिया ने कहा कि इस वेबीनार के माध्यम से हम आज भारत के विविध शास्त्रीय नृत्यों से एक ही प्लेटफार्म पर परिचित हुये हैं । भारत के विख्यात कला विशेषज्ञों को न केवल सुनने बल्कि उनका प्रायोगिक पक्ष भी देखने का अवसर मिला। आदर्श संगीत महाविद्यालय की प्राचार्य श्रीमती रागिनी श्रीवास्तव ने कत्थक नृत्य का विस्तृत परिचय देते हुये आधुनिक स्वरूप एवं विविध घरानों के नवीन प्रयोगों की अवधारणा पर प्रकाश डाला। डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि.वि. सागर के संगीत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने संगीत के अभिन्न एवं आवश्यक अंग नृत्य को अभिनय एवं नाट्य के गायन वादन से समन्वय का प्रतीक बताया। गायन वादन एवं नृत्य में सर्वाधिक स्वास्थ्य एवं चिकित्सीय लाभ नृत्य से होता है ।

तिरूपति से भरत नाट्यटम की कलाविद् डॉ. हेमाबिन्दु ने भरत नाट्यटम के तकनीकी पक्ष पर विस्तृत चर्चा करते हुये मण्डलभेद, चारी, अरमण्डी, हस्तमुद्रा आदि को प्रायोगिक रूप से भी समझाया। बेंगलुरू की कुचिपुड़ी के कला मर्मज्ञ डॉ. बसंत किरण ने कुचिपुड़ी नृत्य में प्रस्तुति दी और कहा कि कुचिपुड़ी एक ग्राम का नाम है, कुचिपुड़ी एवं कथकली एक नाट्य पद्धति है इसलिए इनमें नाट्य शास्त्र के अंगों का प्रतिपालन अधिक होता है। भुवनेश्वर से ओडिसी नृत्य की विदुषी सुजाता महापात्रा ने ओडिसी नृत्य के प्रस्तुति क्रम की जानकारी देते हुए कहा कि कम समय में किस प्रकार से अच्छा प्रदर्शन किया जाये यह एक कला है। आपने ओडिसी नृत्य के सिद्धांत को प्रदर्शन के साथ बखुबी समझाया। डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि.वि. सागर के संगीत विभाग के तबला के सहायक प्राध्यापक डॉ. राहुल स्वर्णकार ने नृत्य में ताल के महत्व पर प्रकाश डालते हुये कहा कि नृत्य को देखकर ताल की संगति दी जाती है न कि सुनकर अभिनय को बजाना ही नृत्य की संगति है। वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान से प्रो. वंदना चौबे ने मणिपुरी नृत्य के उद्भव एवं विकास के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। मणिपुरी नृत्य की प्रसिद्ध रास नृत्य के अध्यात्म एवं अन्य नृत्य जैसे लाई हरोबा, चाली, भंगी-परेंग आदि नृत्यों के बारे में भी जानकारी प्रदान की। पुणे से डॉ. देविका बोर ठाकुर ने सत्रिय नृत्य में पुरूष स्थान एवं स्त्री स्थान को प्रायोगिक रूप से दिखाया। माटी अखरा में पुराने योगाभ्यास के मिश्रण के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि अन्य शास्त्रीय नृत्यों की भांति सत्रिय नृत्य का प्रारंभ भी स्तुति से होता है, उसके बाद शुद्ध नृत्य फिर अभिनय होता है ।

दिल्ली से कत्थक नृत्य की विदुषी नंदिनी सिंह ने कत्थक नृत्य को मानचित्र पर समझाते हुये कहा कि कत्थक एक सहज नृत्य है। ताल और लय की बंदिशों में रहते हुये भी यह खुला नृत्य है। आपने कत्थक नृत्य के प्रस्तुति क्रम पर विशेष चर्चा की और नृत्य का प्रायोगिक रूप से प्रदर्शन करके इसके विभिन्न अंगों को सूक्ष्ता से समझाया। दिल्ली के वरिष्ठ संगीतज्ञ पं. देवेन्द्र वर्मा ने सभी वक्ताओं के वक्तव्यों का समाहार करते हुये बताया कि कत्थक एक जाति है उस जाति के लोगों का काम गायन, वादन, नृत्य है जिस नृत्य को बाद में कत्थक नृत्य की मान्यता मिली। इस जाति का क्षेत्र जयपुर, यू.पी.का पूर्वी भाग के कुछ गांव हैं, जिसमें जयपुर घराना, लखनऊ घराना, बनारस घराना व राजगढ़ घराना प्रमुख है । वेबीनार के सहसंयोजक डॉ. हरिओम सोनी विभागाध्यक्ष संगीत ने इस राष्ट्रीय वेबीनार को अत्यंत महत्वपूर्ण एवं छात्र उपयोगी सिद्ध करते हुये बताया कि आज दिनभर छात्र-छात्रायें एवं कला मर्मज्ञ बड़ी संख्या में जूम एप तथा फेसबुक पर जुड़े रहे एवं उन्होंने जिज्ञासाओं का समाधान भी पाया ।

एक्सीलेंस गर्ल्स कालेज सागर द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय नृत्य वेबीनार में डॉ. इला तिवारी, डॉ. रेखा बख्शी, डॉ. पदमा आचार्य, डॉ. भावना यादव, श्री दिनेश कुमार पाण्डेय, श्री पुष्पेन्द्र पाण्डेय, श्री अभिषेक दुबे सहित महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक एवं छात्रायें ऑनलाईन जुड़े रहे। इस वेबीनार में देश के 12 राज्यों से 740 प्रतिभागियों ने रजिस्ट्रेशन कराया एवं भाग लिया।

Scanned with OKEN Scanner

दैनिक भास्कर

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

कुल पृष्ठ 12+4=16, मूल्य ₹ 4.50 (मधुरिमा आज) | वर्ष 14, अंक 266, नगर

सागर, बुधवार 8 जुलाई, 2020 श्रावण कृष्ण पक्ष- 3, 2077

कम समय में अच्छा प्रदर्शन करना एक कला है : महापात्रा

एक्सीलेंस गर्ल्स डिग्री कॉलेज में संगीत विभाग का राष्ट्रीय वेबीनार

भास्कर संवाददाता | सागर

कम समय में अच्छा प्रदर्शन करना एक कला है। यह कला बड़ी मेहनत, लगन और अभ्यास के बाद आती है। यह बात अंतरराष्ट्रीय ओडिसी नृत्यांगना सुजाता महापात्रा ने कही। वे मंगलवार को एक्सीलेंस गर्ल्स डिग्री कॉलेज के संगीत विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबीनार को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने ओड़िसी नृत्य के प्रस्तुति क्रम की जानकारी दी। साथ ही नृत्य के सिद्धांत को प्रदर्शन के जरिए समझाया।

तिरूपति से भरत नाट्यटम की कलाविद् डॉ. हेमाबिन्दु ने मण्डलभेद, चारी, अरमण्डी, हस्तमुद्रा नृत्य शैली को प्रायोगिक रूप से समझाया। बेंगलुरू के कुचिपुड़ी के मर्मज्ञ डॉ. बसंत किरण ने कहा कि कुचिपुड़ी एक ग्राम का नाम है। कुचिपुड़ी एवं कथकली एक नाट्य पद्धति है। इसलिए इनमें नाट्य शास्त्र के अंगों का प्रतिपालन अधिक होता है। प्राचार्य बीडी अहिरवार ने कहा कि मानवीय शारीरिक कलाओं की भावभंगिमा पूर्ण रसमय अभिव्यक्ति ही नृत्य है। आदर्श संगीत महाविद्यालय की प्राचार्य रागिनी श्रीवास्तव ने कत्थक नृत्य का परिचय देते हुए आधुनिक स्वरूप एवं विविध घरानों के नवीन प्रयोग बताए। डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विवि के डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने कहा कि गायन, वादन एवं नृत्य में सर्वाधिक स्वास्थ्य एवं चिकित्सीय लाभ नृत्य से होता है। तबला सहायक डॉ. राहुल स्वर्णकार ने कहा कि नृत्य को देखकर ताल की संगति दी जाती है न कि सुनकर। वनस्थलि विद्यापीठ राजस्थान की प्रो. वंदना चौबे ने मणिपुरी नृत्य के उद्भव एवं विकास के बारे में बताया। पुणे से डॉ. देविका ठाकुर ने शास्त्रीय नृत्य में पुरुष एवं स्त्री स्थान को प्रायोगिक रूप से दिखाया। दिल्ली से कत्थक नृत्य की विदुषी नंदिनी सिंह, दिल्ली के संगीतज्ञ पं. देवेन्द्र वर्मा ने भी अपने विचार रखे।

वेबीनार में डॉ. प्रेमकुमार चतुर्वेदी, डॉ. शक्ति जैन, डॉ. संजय खरे, डॉ. अपर्णा चाचोंदिया, डॉ. हरिओम सोनी, डॉ. इला तिवारी, डॉ. रेखा बख्शी, डॉ. पदमा आचार्य, डॉ. भावना यादव, दिनेश कुमार पाण्डेय, पुष्पेन्द्र पाण्डेय, अभिषेक दुबे सहित 12 राज्यों से 740 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

Scanned with OKEN Scanner

पत्रिका
patrika.com /patrikamadhyapradesh
/patrika_mp /patrikanews
य एषु सुप्तेषु जागर्ति | सागर, बुधवार, 08 जुलाई, 2020 | श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया संवत् 2077

वेबीनार

भाव भंगिमा पूर्ण अभिव्यक्ति ही नृत्य है: डॉ. अहिरवार

वैदिक काल में नृत्य शारीरिक अभ्यास एवं आरोग्य रखने की है विद्या

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

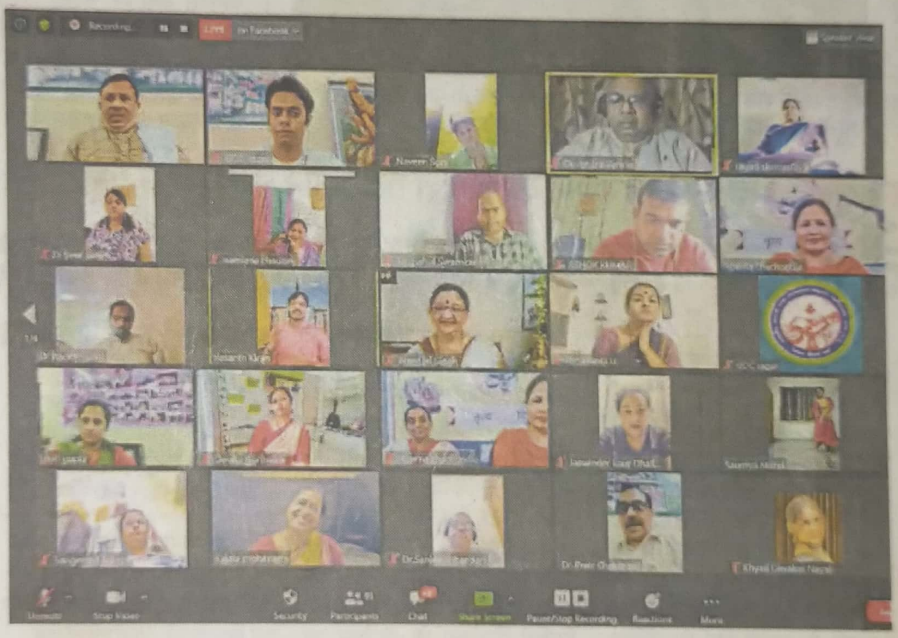

सागर. मानवीय शारीरिक कलाओं की भावभंगिमा पूर्ण रसमय अभिव्यक्ति ही नृत्य है। नृत्य की विधा प्रगतिहासिक काल से प्रारंभ होती है।

उक्त उच्चतर शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर के प्राचार्य डॉ. बीडी अहिरवार ने नृत्य विभाग द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार में कहे। उन्होंने कहा कि नृत्य कला जाति, सममाज, धर्म से परे है। वैदिक काल में नृत्य शारीरिक अभ्यास एवं आरोग्य रखने का विद्या थी। नृत्य आनंद की अभिव्यक्ति के साथ-साथ आराधना तथा शत्रु पर विजय प्राप्ति का माध्यम भी नृत्य है। वेबीनार मार्गदर्शक डॉ. शक्ति जैन प्राध्यापक अर्थशास्त्र ने वेबीनार की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। वेबीनार मार्गदर्शक डॉ. संजय खरे सह प्राध्यापक समाजशास्त्र ने आयोजन में शामिल सभी वक्ताओं को शुभकामनाए दीं।

मंच संचालन करते हुए नृत्य विभागाध्यक्ष डॉ. अपर्णा चार्चोदिया ने कहा कि इस वेबीनार के माध्यम से हम आज भारत के विविध शास्त्रीय नृत्यों से एक ही प्लेटफार्म पर परिचित हुए हैं। भारत के विख्यात कला विशेषज्ञों को न केवल सुनने बल्कि उनका प्रायोगिक पक्ष भी देखने का अवसर मिला।

आदर्श संगीत महाविद्यालय की प्राचार्य श्रीमती रागिनी श्रीवास्तव ने कत्थक नृत्य का विस्तृत परिचय देते हुए आधुनिक स्वरूप एवं विविध घरानों के नवीन प्रयोगों की अवधारणा पर प्रकाश डाला।

डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि.वि. सागर के संगीत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर ने संगीत के अभिन्न एवं आवश्यक अंग नृत्य को अभिनय एवं नाट्य के गायन वादन से समन्वय का प्रतीक बताया। गायन वादन एवं नृत्य में सर्वाधिक स्वास्थ्य एवं चिकित्सीय लाभ नृत्य से होता है।

Scanned with OKEN Scanner

National Webinar

Govt. Autonomous Girls P.G. College of Excellence, Sagar (M.P.)

(Re Accredited By NAAC "A")

Certificate

This is to certified that

Shri / Smt. / Ms. / Prof. / Dr. .....

Participated in One days National Webinar on

भारत के शास्त्रीय नृत्य : एक अवलोकन

Organised by Dance Department

Govt. Autonomous Girls P.G. College of Excellence, Sagar (M.P.)

Held on 07 July 2020.

Dr. Prem Chaturvedi	Dr. Hariom Soni	Dr. Aparna Chachondia	Dr. B. D. Ahirwar
Organising Secretary	Co-Convener, HOD Music	Convener, HOD Dance	Principal / Patron

Scanned with OKEN Scanner